

53

अथवहितपूर्वत्वसंबन्धेनविरक्त्यभाववत्पूर्वपदकेत्यर्थः॥२

श्रु २

प्रा ४

लीगद्यतयनमः॥ न्याययथश्रुतनः॥ श्रीमान् जयनामः॥ समासतः॥ समासतत्त्वमात्रं विवक्षानां सुखायमं॥
तस्य समासत्वं विरक्तिः॥ न्यायपूर्वपदकत्वं नो म समुदायत्वं॥ दधिमधूनमस्तीत्यादी रो वनो न्नर्थयथमा न्
यदज्ञानजयोयस्मि तः॥ यथाजकत्वं न लय विरक्तः॥ सत्त्वाददावः॥ नीलात्यलयादिसमासं नु विर
क्तिर्यथा॥ नदिनाजयनवत्त्वादी लयवत्त्वादिस्तत्त्वाभावात्॥ यथा॥ नीलायमेतानतापि बोधात्॥
नवावद्वीक्षोयत्यदगर्हविग्रहवाक्यस्तत्त्वाभावात्॥ यथा॥ तस्य दाता वातः॥ किं॥ वेत्तत्यनूयादितः॥ के
र्मधनयस्यलयायत्वं न स्यात्॥ लयवत्त्वात्॥ मीकात्रलक्षणा विवेकात्॥ समासादी विरक्तिः॥ ला
यादिविवक्षानु विरक्तिः॥ विनोपि याति यदिक साधुत्वाय॥ नीलात्यलवत्त्वेदिसमूदायाहर्न विर
नादि१

ननु१

नादि१

र्थः

स २

विरक्तिः न्यायपूर्वपदकत्वं॥

कित्त्वर्थवदादिस्तु॥ र्थवत्त्वस्य च यदवृत्त्या बोधकत्वं नूयत्वात्॥ अर्थविरक्तिः॥ न्यायपूर्वपदकत्वं विर
क्त्या॥ यथा॥ जकान् यथा॥ मदी॥ तन्न नद्यत्त्वादीनां नित्यादिः॥ यथा॥ नद्यत्त्वाद्यानयूव
ज्ञानत्वं नो मद्यवाधकत्वात्॥ यथा॥ नद्यत्त्वादि समासता यनेने॥ पूर्ववद्विस्तृते वगमद्यवाधयथाज
कत्वं समासान् मसन वलात्॥ यथा॥ नद्यत्त्वादि नवाधत्वात्॥ अत विवार्थस्तत्र न न गच्छति॥ यथा॥ दी
मत्रर्थस्तत्र विवर्तितया जनयेव वाधः॥ तन्न वाधकविदा मिलेन नाति यायि॥ अत एव वाक्येन सः
मासतां याति॥ एव समासः॥ कलकालः॥ वसिला मत्यादिक मयि समास्य कल्पनं मं वृत्त्यक
॥ तन्न॥ कलकालः॥ वसिला मत्यादिक मयि समास्य कल्पनं मं वृत्त्यक

निरूप २

यमित्यादीनां नित्यादिः॥ अनाद्वयविशेषः॥ नवविषयवत्त्वेन मुही
पयविषयादीनां नद्विषयान्ति याजनयेव वाधः॥ तन्नारा३

ननु॥ तन्न विरक्तिः॥ अर्थवत्त्वस्य च यदवृत्त्या बोधकत्वं नूयत्वात्॥ अर्थविरक्तिः॥ न्यायपूर्वपदकत्वं विर
क्त्या॥ यथा॥ जकान् यथा॥ मदी॥ तन्न नद्यत्त्वादीनां नित्यादिः॥ यथा॥ नद्यत्त्वाद्यानयूव
ज्ञानत्वं नो मद्यवाधकत्वात्॥ यथा॥ नद्यत्त्वादि समासता यनेने॥ पूर्ववद्विस्तृते वगमद्यवाधयथाज
कत्वं समासान् मसन वलात्॥ यथा॥ नद्यत्त्वादि नवाधत्वात्॥ अत विवार्थस्तत्र न न गच्छति॥ यथा॥ दी
मत्रर्थस्तत्र विवर्तितया जनयेव वाधः॥ तन्न वाधकविदा मिलेन नाति यायि॥ अत एव वाक्येन सः
मासतां याति॥ एव समासः॥ कलकालः॥ वसिला मत्यादिक मयि समास्य कल्पनं मं वृत्त्यक
॥ तन्न॥ कलकालः॥ वसिला मत्यादिक मयि समास्य कल्पनं मं वृत्त्यक

वर्तनामसमुदायत्वं च यादृशं **अनुवर्तना** ॥ याति यदिकलस्यार्थवाधकत्वस्य नूययक ॥ १ ॥ कावा
 नक ॥ ८ ॥ ति ॥ यदस्य कावा नूयलवृत्ति ॥ तस्माच्च कभवकवि कल्पेन कचिन्नित्यमवसमासतामात्रा
 तीति **सवित** कि कनामसमुदायस्य वसमासत्वं । न च यवानित्यादिसमुदायस्यापि वा नैवमयार्थ
 वदित्यादिसूत्रपुत्रय ॥ तस्य पुत्रयगतदनात् नयत्रत्वं विपुत्रयपदस्य वित्तकियत्रतया क
 रुदित्यस्य यान्नयान्नमुसंगदानीलालयलादिसमुदायस्य लफवित्तकनस्य यातियदिकल कदादि
 सूत्र ॥ हेवविधयमिति सूत्रस्यार्थवदादिसूत्रपुत्रयत्वं निष्पद्यक विनृद्धात् ॥ पुत्रयस्य कुरुदि
 तसमासतत्रयस्यानेति नयत्रत्वापकतया कदादिसूत्रस्य पुत्रयत्वं सेम्वोदित्यर्थः ॥ १ ॥

त २

त्र २ ॥ ८ ॥ २

तन्नामसमुदायकलकलस्य नूययक ॥ वीतिचन ॥ अनुवर्तनासन्निकलायासावविनिष्कृत्यत्वस्य नियतानूययानवि
 षयत्वस्य ववित्तकिविधेयत्वात् ॥ क ॥ ८ ॥ काल ॥ यादौ वित्तकिन्नानुवर्तनासन्निकलायासावविनिष्कृत्य
 या नीलायलमित्यादौ च वित्तकिन्ननियतानूययानविषयः ॥ साधून्वमासात्वादिद्वय ॥ १ ॥
यत्र नु ॥ अलूकमासातिविक्रयमासवित्तकत्रसत्त्वादन्वविधेयत्वं नयमित्यादौ ॥ १ ॥ सैकतविधेय
 वसत्त्वात् नयसमासयदवत्वं नयसमासत्वं नित्ययत्र ॥ वित्तकनवित्तकिन्ननामसमुदायत्वमिति
 कुरुयथा नीलदधुमित्यनुकनवत्साधवत् नयनीलदधुमित्यनुकनवत् नीलदधुमित्यनुकनवत् नीलदधुमित्यनुकनवत्
 यादृशं लक्षण एकदश ॥ ८ ॥ दधुमित्यनुकनवत् नीलदधुमित्यनुकनवत् नीलदधुमित्यनुकनवत् नीलदधुमित्यनुकनवत्

ह २

॥ ४ ॥

2

२१

४१

४१

८२ नायका २

८१

समासयकलकलासत्वा नीलघटया न हं दः क। एका लः ला दो हु ला धि क व हा य द दया रा वा
 ना निया फिः हु ला धि क व हा लु ला ह द स मन्व क वा ध ता ल्य र्थ क स्य नील घट या न हं दः ला दा
 ब रा वा न नील ला ह द न य टा नि त स्य व सु। र्थः न य स म् व वा न अ हं दः ल स्य नि ना का के ला या
 ता च **अ** हि व द नी ला ल्य ल क म् स र्थः ला दो नी ला दि य द स्य नील व दा दि ला क वि क र या ३
 ह द वा ध न **अ** वा क म वे स मा स ता यो धो नी ति म न नी ला ल्य ल मि ला द या वि क ल्य स मा सा ४ नी
 ल म् ल्य ल मि ला दि वि य ह स त्वा न उ य क र्म क म् क नः ला द या नि ल्य स मा सा ४। **अ** वि य हा २ स्व य द
 वि य हा वा नि ल्य स मा सः ल्य हि य क स व ल ग। अ स्व य द वि य हः ल्य ल्य य ट क या व ल्य द य टि न

७

स्वा घ ट क प द घ टि त ल्प नि ल्प र्थ व ऊ वी हा व ति या फि न ग म् १

वि य ह का र्थ ल्प त्वा न वि जा। गे य स्य नि वि य हः धि क स्य य स्य नि ता ग स्य नि व। ग यि ल्य य ट क या व ल्य द य टि
 त ल्प स लो द दू वी हे नि ल्य स मा सः **य** वा मा जा म द ग्म ४ अ कू नः का र्त्त वी र्यः उ ल्प ल नी ल मि ला दा वि ति या
 धी ॥ वि न्न य नू रा व कू नः ला दो वि द ना न क स र्थ या ग वि ना धि वि ता ग ज न के क्रि या क य ल्य य स्य र्त्त
 य था व कू य द स्य न द व य वी र्थः वि ता ग स्य र्थ य क म् ज ल्प व य व र्थ व य व स म व त क्रि या ज न्य र्त्त लः
 ग्म लि ला क म् ल्प अ न्य त न क म् ज ल्प नि य ला व य व र्थ व ति वा धी। ता द ग क्रि या नू कू ल दा ज दि या
 पा नः वि द न र्थः धा ल्प र्थ ता व कू द क क्रि या ग्म लि त या च स क्रि या व य व र्थ व क म् ल्प नि ल्य म् ॥ या य दि
 त नू द वृ क्का य ल्प हि क्का य य था र्थः **त** च ता द ग क्रि या दि ज न्य र्त्त ला प्र या रि ना व क्का य ल्प हि मा नू वृ

रगार्थः १

प्री०

दावयववर्तिवाक्यार्थः॥ कृष्णमदीकृतः॥ स्वयं कृष्णविलखनं मृदवयवविशगदं तु क्रियाजनकलामिः
लादिवाक्यो नार्थः॥ कृष्णविलखनं॥ एतन्मसनात् कृष्णयस्यरुलाग्रया मदीका कृविजमनिर्मि
तामतिरया तातया कृतकृष्णया नोधीनसंयोगमयेयः॥ कृष्णयस्यार्थत्वात् **तथा** च तादृश
लामिलादिवाक्या नञ्चरुलाग्रया हि नामदीवाया नोधीनसंयोगमयेयः॥ तिवार्थार्थः॥ **अ**था दो चिन्न
येष्वस्य नृत्तः॥ तिक्रमाविवेकितः॥ आदिकर्मलिकः॥ एतन्मसनात् **त**ने यवहारं वै कृदनमागम
तथापुथागः॥ तिवार्थः॥ मूखचतुः॥ एतच्चतुषदस्या क्रादकत्वाधर्मवतिसा बायलकृष्णया कृष्णायि
कवत्तत्वात्कर्मधनयः॥ **न** निवमयूकः॥ आह्लादयति मूखं नृजुगदिदमहल्युतिः॥ सूतना त्रित्याः

७

तमाते४

दाविन्दुयदं नृह्लादकत्वाग्रकोपो न नृह्लापकिः॥ **न** च तात्तत्वायतकृष्णया नृयकं मयूखयसकादिसमा
सायनमहितं॥ **य**कृतं विन्दुत्रिवमूखैः॥ एतन्मसनात् सास्त्रितिवार्थः॥ उपनिर्गयाद्यादिरिः॥ सासा
न्याययोगः॥ एतन्मसनात् सामान्यधर्मप्रयोगः॥ एतन्मसनात् आलंकारिके वयिसामान्यधर्म
प्रयोगसत्ययमावधकत्वात्सा बायलकृष्णययूका नृयकालकोत्रैः॥ एतन्मसनात् उपनिर्गसमानधर्मवा
चकोरयलकायमेव हि ते नृदाहता नृवाचकेमाहलकायमा॥ **किं** च **वै**॥ या दा नृजैरुवतु वाः
विजयोयमं श्रीमं श्रीवसिः॥ कृतमना हवममिकायाः॥ एतदि पूर्वपदार्थप्रधानयोद्यादिसमाप्त
तायमा मं श्रीवसिः॥ कृतमना हवममिकायाः॥ एतदि पूर्वपदार्थप्रधानयोद्यादिसमाप्त

प्री०

मिगरुकिरुवावनसाः त्यादावृहवपदार्थयभानमयूत्रयीसकादिसमाप्तनययकमवउरुसनस्यान
विन्दप्रवसमृदादितिचवस्मासर्वत्रवालकाविकेनजीकतासावनसमृवतिमथसत्यनविन्द्यादि
युदार्थस्यानूष्मदिगुहविनिष्कस्यसाधन्यायागनमयूत्रयीसकादिसमाप्तयिष्याद्यादिसमाप्तवृष
वपदार्थयनेनस्यवसाधन्यायेत्याहसनानुगुणविब्रह्मलोयोपलुगुहजातिविनिष्कयाजुतिविनि
ष्कस्यसाधन्यायनीलायलादीयवह्निर्गुहउरुनपदार्थसाधन्यायिजुनविन्दत्वजातविवातूष्मदिगुहस्था
हसनानुगुहलोकावाञ्छेउरुसनपदस्यापिशाकगुणवहासाधनानलद्वलसीकावातसुतवाकथति
नमेवी॥००॥द्विदियदस्यद्विदिवृद्धिधर्मवलेनतद्वर्धमानिलदलयापीननूकाथाभतधर्मलेनायाहधः

६

मपि २

मस्येवलङ्घः अन्तथाबन्धवन्मुखताकायकमित्यादावपिथोतनूकायलुकिरेषादिकमपिमन्थान
वृष्टित्यामिवलक्ष्मयभेदनायोचनरुमिविन्दमित्यादितथनूत्मेहेनानुविन्दवृद्धिधर्मवृद्धनविन्दमि
त्याकात्रकवाभेदववाक्ययवसानातकहृताःकथयासीत्यादौमथानिकोत्रवगतमित्यादौवीग्यर्थमा
दायेवतलकाकस्यनसविगववाधयेथान्मतयजेनानमीकहृतायायादिसतलुजातिविनिष्कयाध
नानियमात्यादातिनमन्सदृगंननमृतिनमेवविन्दवृद्धिधर्मवदित्यहयलुवाधःउरुसनपदस्यसा
कगुणवहालक्ष्मयो०गुवहालकार्थमयसूर्याथहदाधवसायस्यवसीकावानवीजनानमीकावात
कायानूयवह्निर्गुहउरुसनपदस्यशाकगुणनहालक्ष्मयोचनवृद्धिधर्मसादृश्यनिनूयकात्कचवरे

उ२

स्य२

विब्रह्म२

५१४

एतल्लकार्थविषयकमद्यथाधविनदस्यममयमर्याधरदाधवसायविनदस्यचस्वीकानानदाधः अह
 दाधवसायमुमानसचवतिगहदलकोनययदः॥३॥**उच्यते**॥ मुखवन्दुः॥ यादोयन्दुयदनलक
 म. नसवि. नसवासनाजयवाधवाधधियाविनाधित्वातावाचमयधीः॥**उच्यते**॥ अधिकत्रलत्वमिहदवाधक
 वागवाक्यामाध्वं वृत्तिर्यादः॥**अवाक्य**॥ एतत्सुवाः॥ यदः॥ यादो नजः॥ कर्मसदः॥**म** विनाधीरि
 नये सर्वत्रवाक्यमप्यदस्यवाक्यमदियतियागिकार्थः॥ वाक्यमप्यतियागिकारिन्नसादः॥**म** दना
 प्रयः॥ तिवाक्यार्थः॥ वाक्यमसदः॥ सुनविनाधीयतान्यः॥ यादोयदाः॥ येकदः॥ गयसदात्वयस्यस्य
 नत्वात् **अमु** वाक्यमप्यदस्यसादः॥ दिसन्त्यनवाक्यमसन्त्यमर्थः॥ वाक्यमसन्त्यमर्थः॥**म**

क ५

सदमदिवार्थः **उच्यते** कदः॥ एतदवाधकत्वं नहल्याधिकत्रलत्वमिहयुत्रित्वादीः॥**म** यदलः॥**म** स्याः
 मिनप्रकदः॥**म** नवि विवाहदान्वयः॥ तिमग्नमायिहल्याधिकत्रलत्वमिहयुत्रित्वादीः॥**म** यिकारुः॥**अवाक्य**
 ॥ यादनामायिहवाक्यमप्यदस्यदिवार्थः॥ वाक्यमसिनादिसुहृत्तितार्थः॥ सर्वनामकार्ययागो विहनेयदा
 र्थयाधन्यात् **अन्यथा** अतिसर्वः॥ यादविवाहसिन्नित्वादी सर्वनामकार्यनस्यादित्यादः॥**उच्यते**
 वाक्यमप्यदस्यवाक्यमप्यविषयः॥ लक्ष्म. नवयदेतात्ययमेदकमितिहयूकं **नव** वाक्यादिस
 माशब्दवाक्यमप्यदो गमु वग्ममायनः॥ वग्ममायनः॥ मः॥ यादोवसमासयूकलक्ष्मसत्वा
 कर्ममयलक्ष्मयाकिः॥ समासयूकलक्ष्मयाप्यसमासविहाजकार्याधिभूत्येत्वस्यवाच्यत्वात्

पूरुषयाप्रस्तादा २

नसुन्धामा २

पदप्रत्ययघटितत्वे च ५ तादृशपदज्ञानी य
विषयतायां वि ४ यथा कर्तृतेन
राजनीले मलमिता दोषानि कांतिः ५

तत्त्वपदार्थस्य कर्मता संसर्गेण ~~न~~ निकमण कर्तृरूपानि पदा धेनुहेनोऽनिकमणोऽन्यादिति रावः २
क (६) कालं लूया दो निमिक्कि कमिया दो च लूया विन ह यिन क नि १। व दू वी अ य मी रा यथा मुल्याधिक न द ल
ता वा द यान ति प्र स मी त यदि जाति सर्व लूया दो त लू न व यिन लू द म तदा क म म धा व य य व दान विषय
त्यमवल कर्ण वा र्थ ॥ यो व लू विग्रह समा स य था १ य द यथा मुल्याधिक न द ल त दू र य य टि त समा स र्व
क म धा व य र्व त्रा ज य न व लू या दि विग्रह लू या धि क न द य द द य रा वा ना ति या वि ४ विग्रह स
मा सा न्य त न क य था न लू या धि क न द ल त दू र य य टि त समा स र्व वा त ल व न क म स र्व लू य
दो विग्रह स र्व यिन क नि १ न य म म्दी म्मा मे लू या दा व वि या वि ४ स्व य द विग्रह स र्व वा न विग्रह र्व
न ति व ग म दि ति न म्दी वा सो म्मा मा न लू या विग्रह लू या दू १ ॥ १ ॥ स र्व वा विषयान् य ल स ति
ति न य द द य ३ ता १

क ४ क ३
संख्या वाचक पूर्व य दं क लू या धि क न द समा सा दि गु १ ॥ स लू या दा ना ल य म्मा ४ यं च क म्मा लू या दि क म्म र्ध
न य म्मा दा स ४ य म्मा न म्मा म्मा ल स मा न लू य र्थं य म्मा म्मा ति दि गु न व त म्मा यं च क म्मा ति य वि ॥ नी ला ल ल
मिया द य द सा य स र्व य था दि ॥ यं च लू या द य द सा य लू या धि क न द ति ॥ विग्रह लू या धि क न द ल
ता वा लं च लू या दि य दा स १ अ यं च क म्म धा व य वा ध को र य थ र म दि ति न स वा दि त दि ता र्थ ३ शि ४
य न दि त सा मा न्य यो व चो र्थ विषय य न त उ ल य द समा हा व चु शि ४ य वि धा य त ॥ त दि ता र्थ ३ शि ४
य य म्मा यं च क म्मा ल स र्व क म्मा ल स र्व लू या दि ॥ अ समा स स र्व स र्व ता र्थ ४ क म्मा ल य द यो व वा
क म्मा ल स र्व ता र्थ ४ त य म्मा ल स र्व वि वि य द क द १ क म्मा ल यं च त दान य र्थं वा ति न म्मा ल स र्व लू य ३

श्रीः

मदधीः। तद्विनाथस्य समासादिना ब्रुविषानां नूतद्विनाथस्य यः। तद्विनाथविषययथा पञ्चसूत्रात्।
 वृत्तायुः पञ्च वृत्तायुः पञ्च नाना गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 विनिः। दास्यां नानां कीनादिना विरुद्धादि। **यस्य** समासन तद्विनाथस्य विरुद्धादि।
 वृत्तायुः पञ्च नाना गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 नापिनापत्तिं दिना कीना गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 यथा विविधं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 न धनस्य नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः

श्रीः

नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 वृत्तायुः पञ्च नाना गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 नापिनापत्तिं दिना कीना गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 यथा विविधं नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः
 न धनस्य नूतयुर्वः पञ्च गन्तव्यं नूतयुर्वः पञ्च नाना विनाथानामपत्तिं पञ्च नानाः

दकत्वसतिलुकद्वितीयादिविशिष्टकपूर्वनामयदकत्वगतसूत्रवत् ॥ ॥ यश्चरुलीत्यादिवाच्यस्य
 सत्यमेव नीलाखलादिवान्वयलुफलादि ॥ नचानथास्तस्यवृषत्वनिर्णयमुख्यगतसूत्रस्यात्वात् ॥ तस्य
 वृषसंज्ञाविधानेनैवैवमवाप्तव्यं ॥ तदोक्तं कात्रलायार्थे ॥ नोह्यं अत्राप्तव्यं ॥ तद्विवाचनं ॥
 नचनविवादाः विवादोऽप्यत्राप्तव्यं ॥ विवाधार्थकनप्रसिद्धं नोऽप्यत्राप्तव्यं ॥ विवाचनं विवादानुययः ॥ कर्म
 वयत्वेत्याकात्रमुख्यगतसूत्रवत् ॥ नमीकात्रात् ॥ नचनप्रसिद्धयत्वेनननाययीतावत्प्रवृत्तः ॥ यः
 धर्मात्तन्मायार्थोऽप्यनूयमानं ॥ निवातिर्नमवाधकत्वमवनिर्णयः ॥ नचिन्विः ॥ तदोक्तसूत्रवत्
 नात्वावर्धकत्वमुनिर्मदिकनिर्विघ्नमिच्छादावययीतावत् ॥ नचनप्रसिद्धकालावत्तद्वत् ॥
 ॥ ॥

॥३॥

和

॥ ब्राह्मणो २ ॥ शाखाविषयत्वं तत्पूज्यत्वं वा ३ ॥

दवा ३

कत्वप्रवाचयतीति विवादस्यास्य विवादमित्युक्तं तन्मिति उच्यते न प्रदीयितुं कृत्वा न तावत्तद्वदकृत्य
 यावत्कत्वमुक्तं मन्थनयाः सूत्रां विवादः न तावद्विवादो वा न अत्यन्तासाधार्थकनः अविश्वस्य न क
 र्त्तव्यं न यत्नः । वस्तुनस्तु तत्पूनुष्यपत्रिः प्रमाणं द्विविधं लयादौ उक्तं न पदसमासप्रयुक्तलक्षणं सत्त्वं द
 यः । हस्तस्यैव हती यथा पयस्य दयो हानां यः । यस्तु धर्मप्रदायानामाद्यः सथमथ लोच्यते नृणां सनातः ।
 अथ रुद्रका किल जाः वका किलः पत्रिस्ताः यथ न पयस्य नृणां यः प्रगतं आचार्यः पात्रार्थः नृणां लोके
 हतीयादि विरुक्तिपूर्वपदकत्वात्तावदथा किरित्येवाह । एव तत्पूनुष्यत्वं नोपैति नित्यं । राजपूनुष्यत्वाः
 दोः अतस्तत्त्वाद्यं राजादियदराजसं बन्धिनिग्रमादियदग्रमादिकमादौ लक्षणं राजसं

प्राः

शिखः पूरुषः अमकर्मकारित्वकर्मप्रयः त्रिवाच्यधः ॥ १॥ अतः राजपूरुषः ल्यादो वा जादियदः ॥ २॥ अतः
 उत्तरे धिनिलकः ॥ ३॥ अतः पदं तात्पर्यमिदं नाता राजपदस्य राजसम्बन्धिनिलकः ॥ ४॥ अतः
 किं ॥ अतः नान्यथा नूययहि ॥ ५॥ अतः कदः ॥ ६॥ अतः दान्यमन्त्रिः ॥ ७॥ अतः विद्यादा विद्ययुक्तः ॥ ८॥ अतः विद्यादियः ॥ ९॥
 अतः राजपूरुषः अममनमिद्यादा वन्यया वा धातना माध्यानामिध्यात्वं यान्त्रिकं दान्ययस्यायुः
 नतया राजा ॥ १०॥ अतः दिसम्बन्धनपूरुषादो अतादः ॥ ११॥ अतः कर्मत्वादि सम्बन्धनमनादा वन्ययः समुदा
 दा राजपूरुषादि सम्बन्धनपूरुषादो न किं ॥ १२॥ अतः राजपूरुषः ल्यादिविद्यदः समाना
 र्थतापीत्ययम् ॥ १३॥ अतः निषादः ॥ १४॥ अतः धिद्युतः निषादातीत्यतिविजितवशी समाशालकः ॥ १५॥

११

लाघवाभावेपि वेदस्य मुख्यत्वसंभवेन गौणत्वमिति चेद्देहकर्मधारयसंभवेनान्यः समाहृत्यतिवशीः ॥ १॥
 त्वात् किं कर्मध्वनयस्तुलकः ॥ २॥ अतः विनिरादिति सिद्धात् ॥ ३॥ अतः यवशी समाशालकः ॥ ४॥ अतः विनिरातः ॥ ५॥
 किं तस्मै नरुतया विवलकः ॥ ६॥ अतः नरुतया विवलकः ॥ ७॥ अतः विवलकः ॥ ८॥ अतः विवलकः ॥ ९॥
 यतः नृविद्यो यद्विकल्पे याजनसमुच्चयनिषादस्य नापूर्वविद्याप्रयुक्तकल्पने ॥ १०॥ अतः नृविद्यो यद्विकल्पे याजनसमुच्चयनिषादस्य नापूर्वविद्याप्रयुक्तकल्पने ॥ ११॥
 निनिषधसंकाचः ॥ १२॥ अतः विदिकः ॥ १३॥ अतः विदिकः ॥ १४॥ अतः विदिकः ॥ १५॥ अतः विदिकः ॥ १६॥
 नागकिं हानसमुच्चयः ॥ १७॥ अतः नमूलः ॥ १८॥ अतः नमूलः ॥ १९॥ अतः नमूलः ॥ २०॥ अतः नमूलः ॥ २१॥
 अविद्यामनिर्धुतगोत्यर्थकार्त्तलकः ॥ २२॥ अतः हानाकस्य नलाघवस्य निःशयः ॥ २३॥ अतः हानाकस्य नलाघवस्य निःशयः ॥ २४॥
 मध्वप्रयुक्तवपूर्वविद्याप्रयुक्तकल्पना ॥ २५॥ अतः नमूलः ॥ २६॥ अतः नमूलः ॥ २७॥ अतः नमूलः ॥ २८॥
 अविपूर्वकः ॥ २९॥ अतः निषादी यतः दध्ययनं तत्राधयनं यतः ॥ ३०॥ अतः निषादी यतः दध्ययनं तत्राधयनं यतः ॥ ३१॥

समासेनाभावेपि न सिद्धान्त्यादा
 नरुतिवेत्तः ॥ ५॥

निषादस्य वृत्तान्तनाक्षयनप्रसंगमिति वाच्यं ॥ पुनर्वाक्यमूल्यमपि षष्ठीसमासः ननु निश्चयवत्त्वात्
न न निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासनिषेधः न च ~~न~~ वत्त्वात् समासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठी
केन न निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात्
निषेधात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात्
आ न निषेधः न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात्
उक्तत्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात्
न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात् न न षष्ठीसमासस्य द्वाकद्वयानि निश्चयवत्त्वात्

८१८

۱۲

पुरुषेभ्य उत्तम इत्यनः खेतर पुरुषा वृत्त्युत्तमत्वा श्रय इत्येव

या २

पद २

[illegible]

योगादननिष्पत्तिं गुरुद्विविरहाच्च। एतेन
योगादस्यैव विप्रोषात्ते विनश्यतिः॥३॥

य
श्री ४

कृत्स्नरूपा निर्वर्त्यतः समुदायः
पान्वयला रायनिर्वायतः समुदायः दानमिति स्वयं यथा न्यत्र न्यययथ कनन न्ययनिर्वायतः यथायथ
यः १ न्वयला रायचनिर्वायतः दिनवा राययथ लिधर्मवत्यनव समुदाय यदा या दानयां ४ प्रागुक्तान्वय
ला राया ४ किं यथा जनमिति ज्ञायायि वानां स ह वेतु गीतस्यर्गवेतु जलानां स ह वेतु गीतस्यर्गवेदित्य
न्ययनेथा न्यत्र स या दनमव समुदाय ता दास्य वेनिर्वायता वेकुदका वेकुदनेतनिर्वायतः य
था जक न्ययला वा न्वयस्वीका न स्यात्तु गवां कृष्णानुक्तां स यनदी वा न्यस्यायान्वयसं या द
नमिति यययस्य निर्वर्त्यतः स न्वनिर्वायतः ह ४ यलो क द र्शानिर्वायतः एतत्कृत य स निधन
वनिर्वायतः षष्ठी ताते वेव वी समा स निधनं ॥ ति तन्न न न गू न ४ कृत्स्नियं न्यस्यायनूपयं ४ यून
ते धा सति ॥

न्येता ४

लु २
षा लमय दस्य कृष्णत्वविनिर्वायतः यान्त्रा लमन्त्र स्या यनूपयं ४ पुन्र्वा लमन्त्र स्या या लमन्त्रः
न न पुन्र्वा कृष्ण लमन्त्रविनिर्वायतः यान्त्रियसु मीतः क वलयोगिकत्वमिदं य नत्रय पुन्र्वा सा
वृत्तमन्त्रा नि कर्म धनया सु उरुमपुन्र्वा ल स्यै व कर्म धनयं समुदाय जातिविनिर्वायतः कस्य
गुणक्रिया विनिर्वायतः कथा ग जातिविनिर्वायतः कथा धनय नियमात् अन्यत्र त्वनियमात् यथा स्व
ज ४ कृष्ण ४ कृष्ण स्वर्ग ४ लो यय पुन्र्वा लमन्त्रा दो सफमी समा स एव गति तन्न न निर्वायतः ॥
निधनं वे यथा निर्वायतः द ग प्रथा गत्या साधू ल हायकत ये वतसा र्थक्यात सफमी समा स न न
न कृत्स्नियं ४ गू न न मन्त्रा दिप्रथा गमय ल ॥ यय पुन्र्वा सफमी समा स एव गति तन्न न निर्वायतः ॥

नाशपूरषर्यादिवानलयाह * वा. १ प्रति। ३

नियमन ४२

[illegible]

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

गथावका लादि पद्यवन्मत्सरादिपि
इत्यसम्भित्वेति निश्चय इति भाति ॥ ५ ॥
इति वाक्यम् ॥ ५ ॥

पञ्चमः पक्षः २

संकेतप्रदयथाश्रुतया केदादिपदस्य प्रमादादिविषयक्यादिपदस्य गुतिनिर्गच्छता वंमस्तु न पदस्य गुतिनिर्गच्छता
निवर्थादुक्तं किं प्रदुक्तया धर्मतादृश्यादिविषयकत्वात् मत्संवाच्यगुणद्वयैति नानावर्थमप्युच्यते
त्वात् एतन्मत्संवाच्यपदस्यापि मत्संवाच्यकार्यप्रामाण्यकृतत्वे दृष्टितत्त्वत्वेन न किं पदं विन दृष्टि
मिष्येयं यथावमिति वक्तुं न सिद्धं सूत्रविषयस्य किं कस्य पदस्य निरूपणं न दृष्टं नानाकादिपदस्य
यत्त्वमसंवाच्यपदस्य नानावर्थत्वसंभवात् स्यान्वाच्यपदार्थप्रधानं विग्रहवाच्यं यदावर्थयत्युच्यते
निकसंवाच्यप्रयत्नतासुतास्यपदार्थदृष्टिसंभवेति नित्यं न दृष्टं नानाकादिपदस्य निरूपणं न दृष्टं
स्यति विग्रहवाच्यं विग्रहादिना नानावर्थतादिसंभवात् यत्त्वमसंवाच्यपदस्य निरूपणं न दृष्टं नानाकादिपदस्य
प्रतियोगिनि

यदं गमस्वामिनिलक्षणा विषयदं तात्पर्यमहर्कः ॥ गमयदं गमस्वामिनिलक्षणा एकदं गमविषयज्ञानदानं
या यत्परि वै विज्ञादियम् ॥ गमयदादिना न क्त्वा गवादिर्लक्षणायास्वाम्यादिर्विशिष्टा एकयदार्थया ४ य न
स्य नान्वया यत्परि वै विज्ञादियम् ॥ विषयदं विज्ञास्वामि यनं ॥ गमयदं गमस्वामि यनं विज्ञास्वामी ॥ गम
स्वामीति या धः ॥ विज्ञास्वनं गमस्वनं च कस्येव रानं यद्विवचनात् सन्निहितयनत्वमिति न्यायादिना तस्य
सर्गः ॥ तिसृता दशधा ध्यातनूरा विकल्पात् ॥ गमस्वनं विषय उत्रिणादिष्वयद्वद्वीहो वसह्मया च नयकः
नूरादि विज्ञायदस्य विज्ञास्वामिनिलक्षणेयी ॥ गमस्वनान्वयानूययसि ४ ॥ गमस्वनयदस्यापि ॥ गमस्वनस्व
मिनिलक्षणाया मस्य नूरावविना धः ॥ तिसृता ॥ गमस्वनान्वयानूययसि ४ ॥ गमस्वनयदस्यापि ॥ गमस्वनस्व

॥ श्री ४

九

[illegible]

सम।सुवक्त्रकृपातिसम्यक्
निधीः॥७

सप्ततन्त्र. पाठः ३

७१४

१२

दकलनप्रकलार्थतावश्चदकलनित्यास्वायर्थान्वयित्वस्य व्याख्यासंख्यावाधनं निति धवखदिनवृ
 ह्निदित्वमवगतथा दधानान्वयित्वात् ॥ वैशामेयप्रगद्युतं नूत्यादावपिविना सादित्यलक्षणा
 वेगमेव ह्निदित्ववाधः नवायवहिते पूर्वस्थे वयकमिस्वातप्रकलार्थतावश्चदकलनित्यास्वायर्थ
 न्वयित्वात् प्रत्ययानां खदिनादियदार्थविवेककृत् न्वयसे नूत्यानधवादिपदार्थनूतिर्य
 दार्थनूतिर्यायं **अथ** यीतावस्य पूर्वपदार्थवाधन्यातपूर्वपदस्थे वयकमिस्ववतद्वदस्य प
 दार्थद्वयवाधन्यात् एवमस्यापि प्रकमिस्वातं नूत्यलोक्येव कल्पनादिति विरक्तिमात्रा
 स्वाध्वनिगत्वस्याप्यासंख्यावाधनं सचमो यो मूयिर्पूत्यायर्थकत्वादिति कचिन् ॥ **सुवद्वद्व**

दिविधः ॥ नूतनं न वं समानरुदात् ॥ यथावयवार्थवाधन्यातं नूतनं न यागः ॥ वाधन्ये विरक्त्यर्थान्वयित्वे ॥
नूत एव द्विवचनवद्भवचने ॥ यथा धवखदिनो धवखदिनयलाभा नूत्यादौ ॥ यत्संदृतिः प्रधने नूतसमा
 हावः संदृतिः सादित्यं सादित्यस्येकत्वादकवचनमव तव न ये सकलित्मितायानूत्तनात् ॥ **यथा** दस्युर्व
 यासिमादमित्यादौ दस्युर्वयाः सादित्यमित्याकात्रिकान्वयधीः ॥ **नूत्य** ~~सं~~ दस्युर्वमानयत्यादौ सादित्यसा
 मानाधिकनवधसमाधेन कर्मत्वान्वयं नूतिर्या ॥ **न** **यथा** सु दस्युर्वयदगकित्यामव दस्युर्ववाधकन
 उसादित्यलक्षणा एकवचने त्वनूत्तनात् समानसंज्ञावनदीसंज्ञादिवत्यानिताविकी ॥ **नूत**
 एव दस्युर्वदयमित्यादौ विना उद्यपदलक्षणे मन्वेयवाधमपि व दस्युर्वयवयत्यादौ समानवाध

वा नमः यय दार्थता वस्तु द क ह द ह्ये व द द निया म क त या नी ल य ट या वे क गि व ना म या न ह द
 ०० ला दो न द दान यय लि ० न न य द वि ल उ द द स म व न स नू ये क गि व ना म या न ह द
 ह वि ति वा यी य द वि ल यो स नू ये क गि व ना म या न ह द उ क ना यि य ट य द न ना यि य ट य द न स नू ये क
 स ह द न वि त ०० ला दि नि य मा दा वा त **यू य य य य** नी लो दा व य क गि व ना म या न ह द न नी यी यो य म ००
 स ०० ला य न ना ध न य न य ह रि द ये वि ना ध स्या य न नी का ना त उ क ना यि ह नि य द न सि द ह वि
 मू ला यो वा ध सं र वा त ह नी ला दा व वि ने क गि व ना म या न ह द नि ह नी ला दि दै दा रा व सु य दा सा नू य स्या यि द द
 नि य म क ला तू न न वे म क ल क क ला नि य क ला नि पु र मे य क्रि या य गु ण क्रि या नू ला दो उ क ग

४ प्रा ति य वि का ल व वि र क रा व य क ल न नि वि र कि क प द द मा र वा द न न्य थ इ द स मा सा नि वि र कि क स्ये व स्या त
 वा गु दा दी धि ति का य य का म य को वि नू द त ०० मू ला न ह स ग्य द सी व हं सा वि ल यो लि म ह द उ क गि व ना म
 नू म स ना त ०० ति **म** दि का ० व पु न ० स नू या म म क गि व ना म या न ह द उ क वि र का वि ति सूर्य उ क वि र को व व न ह द उ
 क गि व वि धे य क रा या सार्थ क न न स वि र कि क स्य दै दा नि वि र कि क स्य दै दा नि वि र कि क स्य वे क गि
 व ०० ति न द य क ० दै द वि य य य व हो दै द य वा द क ला था म न उ क गि व स मा स ला रा व वि वि र कि
 ला य ह दि ता नू ० ति दी धि ति या त न वि ल न ॥ ॥ नि य म ते ० पूर्व य दार्थ वि ल यो क वा ध न न क स मा
 सु ल स य यी रा व ल ॥ अ वा क ० अ र्द्ध वि ष्य ली ला दि वा न म य नि य म नू ति उ य क नू नि म दि क मि ला
 दो क नू य द स्य कं रा दि स म भि ति ल क न या क नू हा दि स वं धि स मा र्थ म दि का दि य ति या गि का र रा व नू ति

यथा ना वि ल यो व द न न य रा ना न ४

